आचार्यश्री विशुद्धसागरजी महाराज विराट् व्यक्तित्व

– डॉ.आशीष जैन आचार्य शाहगढ़, सागर
(राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त)
– संयुक्त मंत्री, अ.भा.दि. जैन शास्त्रिपरिषद्
aasheishjain@gmail.com

आचार्यश्री विशुद्धसागरजी महाराज दिगम्बर जैन आचार्य हैं। नग्न दिगम्बर मुद्रा के धारी, पिच्छी-कमण्डलु के साथ पदविहार करने वाले, सभी प्रकार के परिग्रह का त्याग कर अपने अंतरंग-बहिरंग तप में लीन उत्कृष्ट साधक हैं। वर्तमान में, आपके अनेकानेक शिष्य हैं, जो जैन धर्म की महती प्रभावना कर रहे हैं। अध्यात्म के प्रस्तौता आचार्यश्री विशुद्धसागरजी महाराज निजकल्याण के मार्ग को प्रशस्त करते हुए परकल्याण को निरपेक्षभाव से करते हुए जैन धर्म की महती प्रभावना करने वाले महान साधक हैं। आचार्यश्री विशुद्धसागरजी महाराज की देशनाएँ व्यक्ति के जीवन को परिवर्तित करने वाली है और आत्मोन्मुखी बनाने वाली है। उनकी समस्त देशनाओं में जीवन्त जीवन की प्रेरणाएँ और आत्मवैभव को प्राप्त करने की महान विभूति का वैभव स्पष्टतया प्रकट है।

1. परिचय

- जन्म स्थान और तिथि – आचार्यश्री विशुद्धसागरजी महाराज का जन्म **रूर ग्राम जिला भिण्ड म.प्र. में 18 दिसम्बर 1971** में हुआ था। आपका जन्म नाम **श्री राजेन्द्र कुमार जैन** रखा गया। घर में स्नेहवश आपको **लला** के नाम से पुकारते थे।

- **पारिवारिक पृष्ठभूमि** – आपके पिताश्री रामनारायण जी जैन थे। जिन्होंने अपना आत्मकल्याण करते हुए जैनेश्वरी दीक्षा ग्रहण की और समाधिस्थ मुनि श्री विश्वजीत सागर जी महाराज के नाम से आप जाने गए। आपकी मातुश्री श्रीमती रत्तीबाईजी जैन जिन्हें समाधिस्थ क्षुल्लिका श्री विश्वमतिमाताजी के नाम से भी जानते हैं। आप गृहस्थ अवस्था में पाँच भाई-बहिन थे।
- **प्रारंभिक जीवन और शिक्षा** – आपका प्रारंभिक जीवन अपने ही ग्राम में बीता। वहीं रहकर आपने कक्षा दसवीं तक की पढ़ाई की।

- **भाषाज्ञान एवं साहित्य सृजन :** आपको हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत भाषाओं का अच्छा ज्ञान है। आपकी देशनाएँ अध्यात्म से भरी हुई और जन-जन के लिए अत्यंत उपयोगी होने के कारण लोगों के स्वाध्याय का स्थान बनी। साहित्य सृजन में देखा जाए तो शताधिक आध्यात्मिक कृतियां का प्रणयन हआ है।
- **पंचकल्याणक प्रतिष्ठा:** लगभग 100 से अधिक पंचकल्याणक प्रतिष्ठाएँ आपके आशीर्वाद एवं सान्निध्य से सम्पन्न हुई हैं।
- **स्वतः ब्रहमचर्य व्रत अंगीकार :-** अल्पायु में लला राजेंद्र ने अपने ग्राम रुर के जिनालय में भगवान् के समीप स्वयं ही ब्रह्मचर्य व्रत ले लिया था ।
- **ब्रह्मचर्य व्रत अंगीकार करना:-** श्री राजेंद्र भैया पूज्य गुरुवर मुनि श्री 108 विराग सागर जी के साथ विहार करते हुए अतिशय क्षेत्र बारासो पधारे। यद्यपि राजेंद्र ने रुर नगर में जिनालय के सामने दीपावली के दिन ब्रह्मचर्य व्रत के लिया था फिर भी गुरुवर के समीप दिनांक 16 नवम्वर को 17 वर्ष की उम्र में ब्रह्मचर्य व्रत पुनः अंगीकार किया।
- **क्षुल्लक दीक्षा:-** राजेंद्र भैया ने आचार्य विराग सागरजी से 11 अक्टूबर 1989 को भव्य क्षुल्लक दीक्षा ग्रहण की। उनका नाम रखा गया क्षुल्लक श्री यशोधर सागर जी। इस समय इनकी आयु 18 वर्ष की थी।
- **ऐलक दीक्षा:-** परम पूज्य क्षुल्लक श्री यशोधर सागर जी ने आचार्य विराग सागरजी से 2 वर्ष बाद 19 जून 1991 को भव्य ऐलक दीक्षा पन्ना नगर मे ग्रहण की।
- **मुनि दीक्षा:-** ऐलक दीक्षा के 6 माह बाद ही 20 वर्ष की आयु में श्रेयांस गिरी में 21 नवंबर 1991 को मुनि दीक्षा ग्रहण की। नाम रखा गया मुनि श्री 108 विशुद्ध सागर जी महाराज ।
- **आचार्य पदारोहण:-** परम पूज्य मुनि श्री 108 विशुद्ध सागर जी महाराज को परम पूज्य आचार्य श्री 108 विराग सागर जी के कर कमलों से 31 मार्च 2007 को 35 वर्ष की आयु में आचार्य पद पर प्रतिष्ठित किया गया।
- **चेतन कृतियाँ -** आपके द्वारा गहन-अध्ययन अध्यापन के उपरान्त पूर्ण दृढ़ता के साथ पंच महाव्रतों में पालन योग्य होने पर चेतन कृतियों को तैयार किया गया है। आज वे सभी चेतन कृतियाँ जिनधर्म की महती प्रभावना कर रही है। लगभग 50 से अधिक दिगम्बरी दीक्षाएँ आपके द्वारा प्रदान की गई है।

3. आध्यात्मिक सिद्धांत

• **जैन धर्म के प्रति उनकी दृष्टि** –जैन दर्शन नय और प्रमाण के आधार पर कथन करता है। स्याद्वाद और अनेकान्त दृष्टि से विषय को पुष्ट करता है। आचार्यश्री विशुद्धसागरजी महाराज की कथन शैली में शब्दों का जादू होता है, प्रत्येक विषय को सिद्ध करने के लिए वे अनेकान्त एवं स्याद्वाद शैली का प्रयोग करते हैं। उनका प्रिय शब्द ज्ञानी, भावी नय की दृष्टि देने वाला अत्यंत लोकप्रिय शब्द है, जो मोक्षमार्ग में आरूढ़ है, उसे मोक्षमार्ग में स्थापित करना है, उनके लिए आचार्यश्री का ज्ञानी शब्द का प्रयोग अत्यंत प्रेरणीय होता है। उन्होंने न्याय और दर्शन की समझ को विकसित करते हुए जैन दर्शन के गूढ़ रहस्यों को समझा और स्वयं अध्यात्म रस का आनंद ले रहे हैं अन्य को भी इस अध्यात्म रस का आनंद लेने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। उन्होंने जैन दर्शन के अध्यात्म सरोवर आचार्यश्री कुन्दकुन्द स्वामी विरचित अनेकानेक ग्रन्थ समयसार, नियमसार आदि ग्रन्थों को आत्मसात् करते हुए अनेकानेक टीकाओं का प्रणयन किया। आपके मुखारविन्द से निःसृत इन ग्रन्थों के अध्यात्म ने एकान्तवाद पर चोट की है। आपने सिद्धान्त और अध्यात्म में उलझे एकान्तवाद को अत्यंत सहजता के साथ उत्तर दिया है, जिससे वे भी जैन दर्शन के महत्वपूर्ण आयामों को समझ सकें हैं।

• **अहिंसा, तप और करुणा की प्रतिमूर्ति** – दिगम्बर जैन मुनि की चर्या पल-प्रतिपल अहिंसा धर्म का पालन करती हुई रहती है। वे अत्यंत सजग होते हैं। चाहे उनकी आहारचर्या हो, प्रवचन हो, निहार हो, निद्रा हो सभी में इस बात का विशेष ध्यान रखते हैं कि किसी भी प्रकार की हिंसा न हो जाए क्योंकि वे अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह महाव्रत के धारी होते हैं, जो रंच मात्र भी दोष अपनी चर्या में नहीं लगाते हैं, निर्दोष पालन करते हैं। सम्पूर्ण चर्या का एक ही केन्द्र बिन्दु हिंसा से बचना और अहिंसा का पालन करना है। आचार्यश्री विशुद्धसागरजी महाराज अत्यंत सजगता के साथ अपनी चर्या का पालन कर रहे हैं और अन्यों को प्रेरित कर रहे हैं। वे दिगम्बरत्व की निर्दोष चर्या को पालन करने वाले अप्रतिम साधु हैं। संसार के सभी जीवों के प्रति उनकी अत्यंत करुणा है।

• **प्रवचन और लेखन के माध्यम से शिक्षा** – आचार्यश्री के प्रवचन में श्रावक अत्यंत एकाग्र होकर बैठता है क्योंकि उनके प्रवचन मोतियों की माला की तरह हैं, यदि एक मोती उसमें से निकलता है तो माला विखर जाती है उसी प्रकार से एक समय के लिए भी ध्यान भंग किया तो उनके द्वारा कहा जाने वाला छूट जायेगा और उनके प्रवचनों के उस आनंद से वंचित रह जायेंगे, इसलिए श्रोतागण अत्यंत एकाग्र होकर उनके प्रवचनों का अनुभवन करते हैं। उनके प्रवचनों में अध्यात्म, अहिंसा, करुणा का अपार भंडार होता है। उनकी प्रवचनों की एक विशेषता यह भी है, आप जिस समय से सुनना प्रारंभ करेंगे और एकाग्रचित्त होकर सुनेंगे तो आपको पूरा विषय भी समझ आयेगा और साथ-साथ आपको यह भी संज्ञान होगा कि जैन दर्शन के महत्वपूर्ण सिद्धांत कितने अधिक उपादेय हैं।

आचार्यश्री के प्रवचनों की श्रृंखला को ही संग्रहीत करके ग्रन्थों की टीकाएं तैयार की गई हैं। उनकी टीकाएं बहुत वृहत् हैं, जिनका स्वाध्याय अनेक मंदिरों में स्वाध्याय प्रेमी अत्यंत सहजता के साथ कर रहे हैं। उनकी लेखनी से वस्तुत्व महाकाव्य जैसा उत्कृष्ट काव्य का भी सृजन हुआ है। जो महाकाव्य परम्परा में अपना अद्वितीय स्थान रखता है।

4. तप और साधना

• **कठोर तप और उपवास** – दिगम्बरत्व की चर्या ही सबसे कठिन तप है। फिर भी, दशलक्षण महापर्व में उपवास, अन्य व्रतों के उपवास, सर्दी-गर्मी में समानता के साथ रहना, सभी प्रकार के संसाधनों से दूर होकर मात्र अपने आप में लीन रहना, ऐसे दिगम्बर आचार्यश्री विशुद्धसागरजी महाराज एक श्रेष्ठ और उत्तम तपस्वी संत हैं।

• **साधना के अनुभव और समाज को संदेश** – आचार्यश्री हमेशा मुनिधर्म का उपदेश प्रथम दृष्ट्या प्रदान करते हैं। वे कहते हैं मुनिधर्म ही है जो आपके जीवन को सर्वश्रेष्ठ बना सकता है। वे साधना के मार्ग को बताते हैं। जब व्यक्ति मुनि मार्ग पर नहीं चल सकता है तो अपने उपदेशों के माध्यम से समाज को प्रेरित करते हैं कि वे सच्चे श्रावक बन अपने कल्याण के मार्ग को प्रशस्त करें। उन्होंने सदा समाज को संगठित करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया है। जहाँ भी जाते हैं वहाँ की परम्पराओं से कोई छेड़छाड़ नहीं करते हैं, वहाँ के श्रावकों के लिए धर्म में दृढ़ बने रहने का ही उपदेश देते हैं और जीवन को सर्वोत्तम कैसे बनाए जाए? ऐसा उपदेश देते हैं। वे कहते हैं - समाज सदा संगठित रहेगी तो कभी भी कोई भी हमारे तीर्थक्षेत्रों, मंदिरों, धर्मायतनों पर न कब्जा कर सकता है और न ही उन्हें किसी प्रकार का नुकसान पहुँचा सकता है।

5. समाज सेवा और धर्म प्रचार

• **धर्मप्रचार के क्षेत्र में योगदान** – पूरा भारत अपने कदमों से नाप दिया हो जिसने, ऐसे दिगम्बर जैनाचार्यश्री विशुद्धसागरजी महाराज ने चाहे पूर्व दिशा हो, पश्चिम हो, उत्तर हो, दक्षिण हो, सभी दिशाओं में जाकर धर्म की प्रभावना की है। मुनिधर्म के स्वरूप को बताया है, जैनधर्म के सिद्धान्तों को प्रस्फुटित किया है। हजारों किलोमीटर की यात्राएं उन्होंने पैदल ही की है। वे कहते हैं - दिगम्बर मुनिराज का आचारण ही धर्म प्रचार है धर्म प्रभावना है। उन्होंने सदा आचारण को ही प्राथमिकता दी है। वे जिनवाणी की सेवा में सदा अग्रणीय हैं।

• **धार्मिक आयोजन** – आचार्यश्री की प्रेरणा सदा श्रेष्ठ और सादगीपूर्ण आयोजनों के लिए होती है। शताधिक पंचकल्याणकों में अपना सान्निध्य प्रदान किया है। जिनवाणी की सेवा में तत्पर विद्वानों के साथ अनेक संगोष्ठियाँ और वाचनाएँ की हैं। वे उन्हीं धार्मिक आयोजनों के लिए आशीर्वाद प्रदान करते हैं, जिसमें अहिंसा का उद्घोष हो, जिनेन्द्र भगवान की वाणी की चर्चा हो, दिगम्बरत्व को सम्मान हो।

• **समाज कल्याण के कार्य** – आचार्यश्री ने प्रारंभ से ही समाज कल्याण के कार्यों के लिए पृथक् से कुछ नहीं कहा है , जब समाज चाहती है तो आशीर्वाद प्रदान करते हैं। वे समाज को अपने आत्मकल्याण में स्थापित होने का ही उपदेश प्रमुखता से देते हैं। फिर भी, आज अनेक पाठशालाएं, विद्यालय आदि के लिए आपकी प्रेरणा अत्यंत उपादेय सिद्ध हुई है।

6. विशेष योगदान

• **जैन ग्रंथों की व्याख्या** – प्रतिपल स्वाध्याय में संलग्न स्वयं रहने वाले एवं संघ को लगाने वाले आचार्यश्री ने आचार्यश्री नेमिचन्दजी, आचार्यश्री कुन्दकुन्दस्वामी, आचार्यश्री समन्तभद्र स्वामी आदि अनेक आचार्यों द्वारा प्रणीत ग्रन्थों पर टीकाएं और व्याख्याओं का उद्घोष किया है। उनके मुखारबिन्द से निःसृत उपदेश ने बड़े-बड़े ग्रन्थों का रूप लिया है, उन ग्रन्थों का स्वाध्याय श्रावक अत्यंत आनंद के साथ कर रहे हैं। उनकी व्याख्याएं अत्यंत उपादेय हैं।

• **शिक्षण और नैतिकता का प्रसार** – शिक्षा के प्रति वे अत्यंत सजग हैं। वे चाहते हैं कि आज वर्तमान में दी जाने वाली शिक्षा में न्याय, नीति और संस्कार के पाठों को अनिवार्य रूप से सम्मिलित किया जाए। मात्र रोजगार के लिए ही नहीं पढ़ाया जाए, उनका चरित्र निर्माण भी हो क्योंकि चरित्र निर्माण के बिना कुछ भी श्रेष्ठ नहीं हो सकता है। उत्तम शिक्षा ही नैतिकता के बीजों का अंकुरण कर सकती है। उन्होंने अपने प्रवचनों के माध्यम से शिक्षकों, छात्रों, अभिभावकों सभी को संबोधित किया है और शिक्षा के प्रति केवल रोजगार के दृष्टिकोण को बदलकर उत्तम व्यक्तित्व निर्माण के रूप में प्रतिष्ठापित होने की बात कही है।

• **जैन तीर्थों और स्थलों के संरक्षण में भूमिका** – पुरातन का संरक्षण और नवीन तीर्थ निर्माण के लिए उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया है। वे जैन तीर्थ की प्राचीनता को नष्ट किए बिना ही उनका संरक्षण और संवर्धन करते हैं। किसी भी प्राचीन तीर्थ या स्थल को मिटाकर नया तीर्थ या स्थल

बनाने में आचार्यश्री का पक्ष नहीं है। वे कहते हैं जो बना है उसे बना रहने दो, हम दूसरा बना लें, पुरातन को बाधा न पहुँचाये। जिससे हमारी संस्कृति जीवंत बनी रह सके।

7. समकालीन प्रभाव

• **उनके विचारों का समाज पर प्रभाव** – आचार्यश्री के विचारों का प्रभाव समाज बहुत अधिक हुआ है। उनके सकारात्मक प्रेरक सूत्रों ने लोगों के जीवन को परिवर्तित किया है। उनकी प्रेरणाएं पाकर निराशा का आशा में बदला है लोगों ने।

• **आचार्यश्री के प्रति जनसामान्य की श्रद्धा** – आचार्यश्री विशुद्धसागरजी महाराज के प्रति जैन समाज के श्रावकों की श्रद्धा तो है ही, जैनेतर में आचार्यश्री को आध्यात्मिक संत के रूप में लोग इनकी पूजा करते हैं। इनके प्रति दृढ़ श्रद्धा और आस्था रखते हैं।

• **युवाओं को प्रेरणा देने में भूमिका** – आचार्यश्री का जीवन अत्यंत प्रेरणीय है। वे सदा युवाओं को उत्साहित करते रहे हैं। वे कहते हैं – सन्मार्ग पर चलो। युवावस्था में ही धर्म में आरूढ हो जाओ। वृद्धावस्था में धर्म में आरूढ़ होना बहुत कठिन है। अपने संस्कार और मूल्यों में सदा दृढ़ रहो।

8. निष्कर्ष

• **आचार्य के संदेश** – आचार्यश्री का शब्द शब्द अपने में महत्वपूर्ण है, फिर भी कुछ संक्षिप्त कथन यहाँ लिख रहा हूँ –

• आचार्यश्री रात्रिभोजन त्याग के संबंध में कहते हैं – जिस प्रकार से किसी व्यक्ति को डायबिटीज की बीमारी हो जाती है और उसके परिवार के सदस्य उसे मीठा न खिलाया जाए, इसका ध्यान रखते हैं क्योंकि वे जानते हैं ऐसा करने उसकी तबीयत बिगड़ जायेगी, अनर्थ हो सकता है वैसे ही रात्रिभोजन है, घर के लोग अगर ध्यान रखे कि हम रात्रिभोजन कराते हैं तो यह रात्रिभोजन नरक का मार्ग है, हमारे परिवार के लोग नरक जायेंगे, तो वे इस अनर्थ अपने परिवार के सदस्यों को बचा सकते हैं। आप जानते हैं – एक वर्ष रात्रिभोजन त्याग करने से छह माह उपवास का फल मिलता है।

- क्यों परेशान हो मित्र! जो है सो है क्योंकि सबके दिन एक-से नहीं होते हैं। इसलिए घबराने की जरूरत नहीं है आँखों में खुशी के आँसू होना चाहिए, दुःख के नहीं।
- रंग मत देखो, मन देखो। दया करो, करुणा करो सब पर।

- अब तो घर घर में औरंगजेब तैयार हो रहे हैं। वास्तु के नाम पर मंदिर तुड़वाए जा रहे हैं। भूमि लेकर नए मंदिर खड़े कर सकते हो, पुराने तोड़ने की क्या आवश्यकता है? मित्र! जिसने गोपाचल तोड़ा था, वह भी नहीं बच पाया।
- जो तपता है वो कुंदन बन जाता है स्वर्ण बन जाता है, जो जलता है वो राख हो जाता है।
- मित्र! सूखी रोटी खा लेना लेकिन निर्माल्य मत खाना, मंदिर का मत खाना।
- समय बदलते समय नहीं लगता। बुद्धि काम कर रही है तो जिनवाणी समझते रहना।
- जीवन में धैर्य नहीं छोड़ना, सबके दिन बदलते हैं, उनके भी दिल बदलते हैं, जो दिल में बदला रखते हैं।
- शौक अच्छे रखते हो तो शोक नहीं करना पड़ेगा।
- जो कहते हैं कि पंचम काल में मुनि नहीं हो सकते, पंचम काल में साधना नहीं हो सकती है। ऐसे लोग सिंहनी के बच्चे नहीं है, श्यार के बच्चे हो। आपको बोध होना चाहिए कि जिनागम में लिखा है पंचमकाल के अंत तक सच्चे दिगम्बर मुनिराज होंगे।
- जो जिनेन्द्र भगवान का अभिषेक और पूजन करता है उसका प्रचण्ड पुण्य बढ़ता है। फूटे बर्तन, टूटी द्रव्य, फटे वस्त्र, काठ के आसन से दरिद्रता बढ़ती है। सुंदर से सुंदर द्रव्य, भक्ति से भरकर, विवेक पूर्वक, कषाय मंद रखकर पूजा करना, इससे पुण्य की प्राप्ति होगी।
- **आधुनिक समाज में उनकी प्रासंगिकता** – वर्तमान में जहाँ भौतिकता की चकाचौंध में युवा पीढ़ी व्यसनों और पतन की ओर जा रही है, वहीं दूसरी आचार्यश्री से प्रभावित होकर बहुत बढ़ी संख्या में युवा अपने नैतिक उत्थान के लिए कार्य कर रहे हैं। इसी की फलश्रुति हैं कि आचार्यश्री के संघ में प्रायःकर सभी युवा साधु हैं, जो आज अपने आचरण और चर्या के बल समाज और देश को पथप्रदर्शित कर रहे हैं।
- • **भविष्य के लिए उनका योगदान और प्रेरणा** – आचार्यश्री विशुद्धसागरजी महाराज का योगदान का क्षेत्र बहुत व्यापक है, जिसमें धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन के हर पहलु दिग्दर्शित होते हैं। उनके योगदान और प्रेरणा की कुछ महत्वपूर्ण बातें इस प्रकार हैं:
- **धार्मिक शिक्षा और प्रभावना :** आचार्यश्री ने जैन धर्म के सिद्धांतों और उपदेशों को सरल और सुलभ तरीके से प्रस्तुत किया है। उन्होंने जैन धर्म के शुद्ध और परमात्मा के मार्ग को जन-जन तक पहुंचाने के लिए कई उपदेश दिए और विभिन्न स्थानों पर जैन धर्म की प्रभावना का कार्य किया।

- **धार्मिक संस्कार और साधना:** आचार्यश्री ने साधना की उच्चतम अवस्था को प्राप्त किया और दूसरों को भी इसके महत्व को समझाया। उनके जीवन में तप, संयम और सत्य के प्रति निष्ठा से एक आदर्श उदाहरण प्रस्तुत किया गया। उनके उपदेशों से लाखों लोग ध्यान, साधना और आत्मिक शांति की ओर प्रेरित हुए हैं और होते रहेंगे।
- **समाजसेवा और जीवन के उच्च उद्देश्य:** आचार्यश्री ने सदा अहिंसा को महत्व दिया है। अहिंसा ही एक ऐसा मार्ग है, जो त्याग और समर्पण का प्रतीक है। उनके माध्यम से जो हिंसा में प्रवृत्त हैं, ऐसे अनेक लोगों के जीवन में हिंसा की प्रवृत्तियों को हटाकर अहिंसा का सूत्रपात होगा। हर व्यक्ति को अपने जीवन में दयालुता और सहानुभूति की भावना को स्थान देना चाहिए, इन प्रेरणाओं के आधार पर मानवीय जीवन को नवीन दिशा प्राप्त होगी।
- **आध्यात्मिक और मानसिक शांति:** आचार्यश्री का ध्यान और साधना जीवन की परेशानियों को शांत करने का एक मार्ग है। उन्होंने सभी को मानसिक शांति और ध्यान की शक्ति को समझाया है, ताकि वे जीवन में सकारात्मक दृष्टिकोण रख सकें और संकटों से बाहर सकें।
- **प्रेरणा और मार्गदर्शन:** आचार्यश्री ने जीवन को एक लक्ष्य और उद्देश्य से जीने का महत्व बताया। उन्होंने सभी को सिखाया कि हर व्यक्ति को अपने जीवन को सकारात्मक दिशा में मोड़ना चाहिए, आत्म-निर्भर बनना चाहिए और सर्वत्र अच्छाई फैलाने का प्रयास करना चाहिए।
- आचार्यश्री विशुद्धसागरजी महाराज का योगदान केवल उनके समय तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि उनकी शिक्षाएँ और प्रेरणा सदा हर व्यक्ति के जीवन में एक उज्जवल मार्गदर्शन की तरह काम करती हैं। उनके उपदेश और जीवन की सादगी, तपस्या और सेवा की भावना समाज के लिए हमेशा प्रेरणादायक रहेगी।

154, गीतांजलि ग्रीनसिटी

संजय ड्राइव रोड़, सागर म.प्र. 470002

9329092390